School of Social Sciences

Certificate

I hereby declare that the short synopsis "**२१वीं शताब्दी में भारत की पड़ोस नीति का अध्ययन : नेपाल के विशेष संदर्भ में**" ("21vi Shatabdi Mein Bharat Ki Pados Niti Ka Adhyayan: Nepal Ke Vishesh Sandarbh Mein") being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy In Political Science under school of Social Sciences of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2022.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Dr. Ananda Nanad Tripathi and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

Saurabh Verma

Saurabh Verma
En. No.: **2100605**

Research Supervisor

Dr. Ananda Nand Tripathi
Faculty of Political Science

28/5/23

Prof. Santosha Kumar
Director of School of Social Science

28/05/25

Prof. P.K.Pandey
Director, R&D Cell

Scanned with OKEN Scanner

"२१वीं शताब्दी में भारत की पड़ोस नीति का अध्ययन : नेपाल के विशेष संदर्भ में"

"21vi Shatabdi Mein Bharat Ki Pados Niti Ka Adhyayan: Nepal Ke Vishesh Sandarbh Mein"

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN POLITICAL SCIENCE

to

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by

Saurabh Verma

En 2100605

Under the Supervision of

Dr. ANANDA NAND TRIPATHI

Faculty of POLITICAL SCIENCE

School of Social Sciences

U.P. Rajarshi Tandon Open University

Shantipurm, (Sector –F) Phaphamau, Prayagraj – 211021

Scanned with OKEN Scanner

सारांश (**Abstract**)

21वीं शताब्दी में भारत एवं नेपाल संबंधों में उतार- चढ़ाव देखने को मिलते है। भारत में इस दौरान दक्षिण पंथी भारतीय जनता पार्टी एवं सहयोगी दलों की सरकारें तथा कांग्रेस और सहयोगी दलों की सरकारों का शासन रहा। उधर नेपाल में सदी के प्रारंभ में राजपरिवार हत्याकाण्ड, नरेश वीरेंद्र के छोटे भाई ज्ञानेंद्र का राज्याभिषेक, उनका चुनी हुई सरकार को हटाना, राजशाही का पतन, नेपाल का विश्व में एकमात्र हिंदू राष्ट्र से पथ निरपेक्ष राष्ट्र में परिवर्तन, नेपाली कोंग्रेस तथा माओवादियों की अल्तमत सरकारें देखी। भाजपा एवं कांग्रेस की धुरविरोधी विचारधारा का प्रभाव भारत की विदेश नीति के साथ पड़ोस नीति पर स्पष्ट रुप से दिखाई देता है। भारत की विदेश एवं पड़ोस नीति को इस कालखंड में देश का नेतृत्व करने वाले तीन प्रधानमंत्रियों - अटल बिहारी वाजपेयी, डों. मनमोहन सिंह एवं नरेन्द्र मोदी के व्यक्तित्व ने नई दिशा प्रदान की। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य 21वीं शताब्दी में भारत-नेपाल संबंधों के विभिन्न आयामों विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है।

मूल शब्द (**Key words**): 21वी शताब्दी, भारत - नेपाल संबंध, विदेश नीति, भारत की पड़ोस नीति, भारतीय जनता पार्टी, कांग्रेस, माओवादी।

Saurabh Verma

Scanned with OKEN Scanner

CONTENTS

S. No.	Description	Page No.
1	Introduction	1-2
2	Literature Review	2-7
3	Description Broad Area	7-8
4	Objectives of the Study	8-8
5	Research Methodology	8-11
6	Expected Outcome of the Research	11
	References	
	Plagiarism Report	

Saurabh Verma

Scanned with OKEN Scanner

1. प्रस्तावना

भारतीय विदेशनीति के शिल्पकारो ने नीति निर्माण के समय हमेशा देश के निकट पडोसियों के साथ सम्बन्धो उच्चतम प्राथमिकता पर रखा । स्वतन्त्रता के पश्चात देश के प्रथम प्रधानमंत्री एवं विदेशमंत्री जवाहरलाल नेहरू यद्यपि एक अंतर्राष्ट्रीय सोच के व्यक्ति थे और अपनी विदेशनीति में गुटनिरपेक्षता को बहुत महत्त्व देते थे । परन्तु उन्होंने पडोसी देशों के साथ मधुर सम्बन्धो पर हमेशा बल दिया । चीन के साथ पंचशील तथा पाकिस्तान के साथ सिंधु जल समझौता इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं । नेपाल के साथ शांति एवं मैत्री संधि, 1950 भी नेहरू के शासन की देन हैं, जो भारत-नेपाल के मधुर सम्बन्धो के आधार स्तभों में है ।

भारत नेपाल सम्बन्ध, 1990 में नेपाल में बहुदलीय लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना के पश्चात के बाद लगभग मधुर रहे हैं । सन 2001 में राजकुमार दीपेंद्र के द्वारा राजा वीरेन्द्र एवं उनके समस्त परिवार की हत्या, उसके तुरंत बाद स्वंय राजकुमार की मृत्यु के बाद राजा वीरेन्द्र के छोटे भाई ज्ञानेंद्र राजसिंहासन पर आसीन हुए । उनका झुकाव चीन की ओर था । उधर माओवादियों द्वारा बढती हिंसा के कारण कई सरकार आई और गई । अतः 2005 में नरेश ज्ञानेंद्र ने निर्वाचित संसद को भंग करके सत्ता अपने हाथों में ले ली, जिससे आतंरिक स्थिति और भी खराब हो गई । माओवादी हिंसा में और वृद्धि हुई, एवं सात दलों के गठबंधन ने लोकतंत्र की दुबारा स्थापना के लिए आंदोलन को गति दी । विश्व के लगभग सभी देशों ने राजा के इस कदम की निंदा की । भारत के विदेश सचिव श्याम सरन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए राजा को लोकतंत्र की बहाली के लिए तैयार कर लिया । अतः अप्रैल 2006 में राजा ने जनता के सामने झुकते हुए, सात दलीय गठबंधन के नेता गिरिजा प्रसाद कोइराला को प्रधानमंत्री नियुक्त किया । नेपाली संसद ने माओवादियों की यह मांग मान ली कि एक नई संविधान सभा का गठन किया जाये । राजा को उसकी सारी शक्तियों से वंचित कर दिया गया; वह सर्वोच्चय सेनापति भी नहीं रहा तथा वह नाममात्र का राज्याध्यक्ष रह गया । संसद ने विश्व के एकमात्र हिन्दू राजतन्त्र का रूप बदलकर देश को पथ निरपेक्ष घोषित कर दिया ।

इस पृष्ठभूमि में भारत को अपनी विदेश एवं सुरक्षा नीतियों पर पुनर्विचार करना आवश्यक हो गया । यह चिंता व्यक्त की गई कि नेपाल की राजनीति में साम्यवादी चीन मुख्य स्थान प्राप्त करता जा रहा है । साथ ही भारत के लिए विशेष चिंता का विषय था जेहादियों तथा अन्य भारत विरोधी तत्वों का नेपाल से अपनी गतिविधियां चलना । इस कारण भारत को अपनी नेपाल नीति पुनः निर्धारण करना पड़ रहा है ।

28 मई 2014 को नरेंद्र मोदी ने भारत के प्रधानमंत्री पद की शपथ ग्रहण की । अपने शपथ ग्रहण समारोह में नरेंद्र मोदी ने समस्त सार्क देशों के शासनाध्यक्षों को बुलाया, जिसमे नेपाल भी शामिल था । 3-4 अगस्त 2014 को भारत के प्रधानमंत्री मोदी ने नेपाल की पहली यात्रा की । भारतीय प्रभाव को बढ़ाने एवं चीनी पक्ष को सीमित करने के लिए उन्होंने दोनों देशों के पुराने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक सम्बंधो की विरासत को और मजबूत करने पर बल दिया ।

Saurabh Verma

Scanned with OKEN Scanner

उन्होंने भारत की ओर से दस हज़ार करोड़ नेपाली रुपये की सहायता की घोषणा की तथा नेपाल में के लिए भारत द्वारा सड़क एवं इंटरनेट सेवाओं का जाल बिछाने का भी वादा किया । साथ ही 5600 मेगावाट पनबिजली उत्पादन योजना के वर्ष के अंत तक शुरू होने का भी वादा किया ।

भारत से आने वाले पेट्रोलियम पदार्थों के निर्यात में भारी कमी के कारण अक्टूबर 2015 को नेपाल ने "पेट्रो चाइना" के साथ दो समझौतों पर हस्ताक्षर कर लिए । इसके अंतगर्त चीन द्वारा 1000 मीट्रिक टन पेट्रोलियम उत्पाद तथा 13 लाख लीटर गैसोलीन की आपूर्ति नेपाल को की जाएगी । प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी नेपाल यात्रा के दौरान दोनों देशों के संम्बंधो को पुनः सामान्य बनाने पर बल दिया था, नेपाल की जनता एवं राजनेताओं ने भी उनका जोरदार स्वागत किया था, लेकिन पेट्रो चाइना के साथ दो समझौतों ने साबित कर दिया, कि भारत द्वारा नेपाल के लिए अपनी नीति पर पुनः विचार की सख्त जरूरत है ।

नेपाल में अप्रैल 2015 आये भूकंप के समय भारत ने मदद के लिए ऐसी तत्परता दिखाई मानो नेपाल, भारत का ही कोई प्रदेश हो । परन्तु मधेशी आंदोलन के समय नेपाल में भारत विरोध चरम पर रहा, नेपाल ने इस आंदोलन के लिए भारत को जिम्मेदार ठहराया । फिर भी मधेशी आंदोलन पर सयुंक्त राष्ट्र संघ में हुई चर्चा में भारत ने नेपाल का पक्ष लिया ।

2. साहित्य समीक्षा

यादव, डॉ. भूपेंद्र सिंह, भारत-नेपाल समसामयिक अध्ययन, इविन्सेपुब पब्लिशिंग बिलासपुर (2022)

नेपाल हिमालय के दक्षिण ओर बसा एक छोटा राष्ट्र है जो भारत के लिए विशेष सामरिक महत्व रखता है क्योंकि नेपाल की उत्तरी सीमा चीन के तिब्बत प्रान्त से मिलती है। नेपाल भारत के उत्तर-पूर्व में स्थित तथा चीन एवं भारत के मध्य एक प्रतिरोधक मध्यस्थ राज्य(Buffer State) की भूमिका निभा रहा है। नेपाल में लोकतंत्र की स्थापना तथा भारत में एन.डी.ए.सरकार के गठन के पश्चात् भारत पड़ोसी देशों के प्रति सकारात्मक सम्बन्धों को महत्व दे रहा है, विशेष रूप से नेपाल के साथ कई सम्बन्धो को नई दिशा देने का सशक्त धरातल तैयार हुआ है, परन्तु नेपाल की विदेश नीति में चीनी तत्व की सशक्त उपस्थिति और नेपाल की आंतरिक राजनीति में अशांति का दौर और अन्य नकारात्मक पहलू भारत-नेपाल सम्बन्धों की संभावनाओ पर विराम लगाते है। हाल ही चीन पाकिस्तान सम्बन्धो का नवीन अध्याय भी शुरू हुआ है, जिससे दक्षिण एशिया क्षेत्र की राजनीति भी प्रभावित हो रही है। उक्त सन्दर्भ में भारत-नेपाल सम्बन्धों का प्रासंगिक अध्ययन आवश्यक हो गया है। पुस्तक का कालखंड 1947 से 2022 तक रखा गया है। 21वीं सदी में अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ में राष्ट्रीय

Scanned with OKEN Scanner

प्रभुसत्ता के कठोर प्रतिमान आर्थिक रूप से पारस्परिक आत्मनिर्भरता के सम्बन्धों पर आधारित होते जा रहे है. ऐसी स्थिति मे भारत व नेपाल दोनों को अपने राष्ट्रीय. क्षेत्रीय प्रतिमानों के साथ-साथ सहयोग के नवीन आधार ढूंढने की आवश्यकता है। दोनों देश अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा व राष्ट्रीय हितों को ध्यान मे रखकर विदेश नीति का निर्धारण करें तभी ये स्वतंत्र रूप से बहुआयामी राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय हितों का संवर्धन करने में सक्षम हो सकेंगे। ये पुस्तक निश्चित ही शोध मे सहायक होगी ।

चौधरी, स्वाति रंजन, भारत नेपाल सम्बन्ध एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण, मेधा पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली,(2015)

इस पुस्तक माध्यम से भारत नेपाल संबंधों के परिपेक्ष मे चर्चा की गई है । अतीत मे भारत नेपाल के बीच हुई शान्ति एवं मैत्री संधि पुस्तक प्रकाशन तक किये गए समझौतों तथा उत्पन्न विवादों पर प्रकाश डाला गया है । भारत. नेपाल देशो के इतिहास पर नजर डालने पर कई प्रकार के ऐसे तथ्य मिलते हैं जिससे यह परिलक्षित होता है कि दोनो देश एक दूसरे से न केवल न केवल प्रचीन काल से अत्यन्त घनिष्ट रूप से जुड़े हुए थे वरन् दोनों जगह एक ही समाज दिखायी देता है और इनकी राजनीतिक सीमाएँ भी लुप्त हो जाती हैं। यह पुस्तक इस ओर प्रकाश डालती है । इसमे एक ही अखण्ड भारत या नेपाल की तस्वीर दिखती है।

मंडल. मोनिका. इंडो-नेपाल रिलेशन्स. के. डब्लू. पब्लिशर्स प्र. लि. नई दिल्ली,(2014)

भारत-नेपाल संबंध भौगोलिक निकटता से लेकर गहन सांस्कृतिक संबंधो तक के कारणों से अद्वितीय हैं। हम व्यापक संस्थागत और सामाजिक संबंध साझा करते हैं। सांस्कृतिक. आर्थिक और भौगोलिक कारकों के साथ-साथ एक साझा धर्म के सामान्य बंधन का द्विपक्षीय संबंधों पर बहुत प्रभाव पड़ा है। कुछ उथल-पुथल के बावजूद. भारत-नेपाल संबंध घनिष्ठ. स्थिर और पारस्परिक रूप से लाभकारी रहे हैं। और फिर भी. दो संप्रभु राष्ट्रों के रूप मे. भारत और नेपाल दोनों स्वाभाविक रूप से सांस्कृतिक. आर्थिक और सुरक्षा मुद्दों मे अपने राष्ट्रीय हितों द्वारा निर्देशित होते हैं। इस संदर्भ मे उनके घरेलू निर्धारकों के साथ भारत-नेपाल संबंधों का व्यापक विश्लेषण अत्यधिक महत्व रखता है। निबंधों के इस संग्रह का उद्देश्य दोनों देशों के मध्य मौजूद कानूनी जटिलताओं का विस्तृत विश्लेषण प्रदान करना और अंतरराष्ट्रीय कानूनी दृष्टिकोण से प्रमुख समस्याओं का विश्लेषण करना है। यह आशा की जाती है कि यह खंड इस विषय पर साहित्य मे मौजूद महत्वपूर्ण अंतर को भर देगा. जो कानूनी मुद्दों की तुलना मे राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों पर अधिक समर्पित है। वस्तुतः ऐसा कोई कार्य नहीं है जो

Saurabh Verma

Scanned with OKEN Scanner

भारत-नेपाल संबंधों से संबंधित प्रमुख अंतरराष्ट्रीय कानूनी मुद्दों की गहन जांच करता हो। यह पुस्तक अवश्य ही शोध में मार्गदर्शक सिद्ध होगी।

श्रीवास्तव, डो. एस.पी.एल., सिंह, डॉ. करुणेन्द्र और कुमार, डॉ. प्रमोद कुमार, भारत- नेपाल सम्बन्ध चुनोतियाँ एवं समाधान, एएसआर पब्लिकेशन, लखनऊ, (2018)
इस पुस्तक का मुख्य विषय भरा- नेपाल के आपसी सम्बन्धो के मध्य उत्पन्न चुनौतियों की ओर ध्यान आकर्षित करना है। इस पुस्तक में भारत - नेपाल संबंधों की समीक्षा की गई है। दोनों पड़ोसी देशों समक्ष उत्पन्न समस्याओं के समाधान बताये गए है। ये पुस्तक निश्चित ही शोध में सहायक होगी।

सिंह, डॉ. आभा, भारत नेपाल सम्बन्ध : एक राजनितिक अध्ययन, अंकित पब्लिकेशंस, दिल्ली (2018)
इस पुस्तक में भारत- नेपाल संबंधों के राजनैतिक आयामों की समीक्षा की गई है। किस प्रकार से दोनों देशों के आपसी संबंधों में इतनी कटास आने पर भी एक- दूसरे से जोड़े हुए हैं! दोनों देशों के संबंधों पर साम्यवादी चीन का प्रभाव साफ दिखता हैं। नेपाल के राजनेता समय-समय पर चीन कार्ड खेल कर भारत सरकार के लिए समस्या उत्पन्न करते रहे हैं। यह पुस्तक अवश्य ही शोध में मार्गदर्शक सिद्ध होगी।

देवी, डॉ. मुकेश, नेपाल चीन के बढ़ते सम्बन्ध: भारत की सुरक्षा चिंता, ब्लूरोज पब्लिशर्स, दिल्ली,(2017)
पुस्तक वर्तमान परिदृश्य में नेपाल गणराज्य और साम्यवादी चीन के मध्य परिवर्तित होते संबंधों पर आधारित है। इसमें बीजिंग - काठमांडू गठजोड़े के कारण नई दिल्ली की सुरक्षा चिंताओ को उठाया गया हैं। ये पुस्तक शोध में सहायक होगी।

झा, डॉ. मुकेश कुमार, भारत नेपाल सम्बन्धो के आयाम, कल्पज़ पुब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, (2012)
इस पुस्तक में भारतनेपाल के ऐतिहासिक संबंधों की पृष्ठभूमि-, दोनों देशों के मध्य सहयोग के क्षेत्र, दोनों देशों के मध्य विवाद के बिंदु एवं भारत के लिए नेपाल से संबंधों का महत्त्व एवं इसमें चीनी तत्व की उपस्थिति पर व्यापक प्रकाश डाला गया है। ये पुस्तक शोध के लिए ऐतिहासिक दर्शन उपलब्ध कराएगी।

Saurabh Verma

Scanned with OKEN Scanner

मिश्रा, अरुण, भारत नेपाल संबंधों के विविध आयाम, उदय पब्लिशिंग हाउस, विशाखापट्नम, (2020)

भारत-नेपाल संबंध प्रचीन काल से ही जीवंत रहे हैं। भारत नेपाल के संबंध राजनीतिक से अधिक सांस्कृतिक हैं। किन्तु दोनों देशो के पारस्परिक राजनैतिक संबंध मे प्राचीन काल से लेकर आज तक किस प्रकार परिवर्तन आते रहे हैं और दोनों देशों के मध्य राजनीतिज्ञों की नीति एवं वैचारिक गतिशीलता किस प्रकार की भूमिका का निर्वाह करती है। इस आलोक में पुस्तक को लिखा गया है। यह पुस्तक भारत - नेपाल संबंधों का विहंगम द्रश्य प्रस्तुत करती हैं। इसमें दी पठान सामग्री शोध विषय के लिए लाभकारी सिद्द होगी।

पांडेय, डॉ. पियूष कुमार, भारत नेपाल सम्बन्ध अतीत से वर्तमान तक, वी. एल. मीडिया सोलूशन्स, नईदिल्ली (2021)

यह पुस्तक दोनों देशों के अतीत से लेकर वर्तमान संबंधों को दर्शाती हैं । भारत और नेपाल मित्रता एवं सहयोग के अद्वितीय सम्बन्ध को साझा करते हैं जो खुली सीमाओं तथा दोनों देशों के लोगों की परस्पर प्रगाढ नातेदारी एवं सांस्कृतिक संबंधों से साफ़-साफ़ दिखाई देता है। 1950 की भारत - नेपाल शान्ति और मैत्री संधि के प्रावधानों के अंतर्गत नेपाली नागरिक भारतीय नागरिकों के समान सुविधाओं तथा अवसरों का लाभ उठा सकते हैं । नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी के भाग के रूप में तथा गुजराल सिद्धांत जैसे विचारों का पालन करते हुए भारत को पड़ोसी देश की लोकप्रिय आकांक्षाओं को प्रतिबिम्बित करने वाले किसी भी विचार के प्रति सजग रहना चाहिए. अतः इस संधि को संशोधित करना नेपाल में एक लोकप्रिय माँग है तो भारत को भी नेपाल को उसके विचार के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया देनी चाहिए । फिर भी, यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि मौजूदा संधि के अंतर्गत दोनों देशों के नागरिकों को पारस्परिक राष्ट्रीय व्यवहार जैसे प्रावधान ने नेपाल को लाभ पहुँचाया है. विदेश मंत्रालय (MEA) के आँकड़ों के अनुसार, लगभग 6 मिलियन नेपाली नागरिक भारत मे निवास तथा कार्य करते हैं । भारत नेपाल के लिए सदैव एक मित्र रहा है और ऐसे विचारों को सरकार के उच्चतर स्तर जैसे प्रधानमन्त्री द्वारा हालिया नेपाल यात्रा के दौरान पर व्यक्त किया जाता है । यह पुस्तक शोध को नई दिशा प्रदान करेगी ।

सिंह, राम अयोध्या, संशक पड़ोसी भारत-नेपाल सम्बन्ध, पुष्पांजलि प्रकाशन, नई दिल्ली, (2019)

इस पुस्तक में भारत नेपाल संबधो पर लिखते हुआ नेपाल नरेश त्रिभुवन से वीरेंद्र के

Scanned with OKEN Scanner

कार्यकाल के चर्चा की गई हैं। पुस्तक दोनों नरेशों के भारत के प्रति विपरीत रवैये पर प्रकाश डालती हैं। 29 मिलियन लोगों की आबादी के साथ नेपाल दुनिया का 45वां सबसे बड़ा देश है। इस प्रकार, यदि केवल अपने आकार के लिए, नेपाल एक राष्ट्र-राज्य के लिए एक जागीरदार होने के लिए बहुत बडा है। देश को अपने इतिहास पर गर्व है कि वह कभी उपनिवेश नहीं रहा और उसकी एक महत्वपूर्ण भू-रणनीतिक स्थिति है, जिसके दोनों ओर भारत और चीन हैं हालांकि, सौहार्दपूर्ण राजनयिक संबंधों की पारंपरिक धारणाओं के विपरीत, नेपाल और भारत के एक-दूसरे को देखने के तरीके मे काफी अंतर है। पुस्तक शोध में ऐतिहासिक पक्ष को मजबूत करेगी।

शुक्ला, प्रो. ए.पी और त्रिपाठी, प्रो. एस.एन.एम., भारत - नेपाल सम्बन्ध : चुनोतियाँ और अवसर, नई दिल्ली, (2018)

इस पुस्तक में भारत एवं नेपाल के बीच उत्पन्न चुनौतियों एवं अवसरों की समीक्षा की गई है। नेपाल द्वारा लगातार भारत की अनदेखी करने के कई कारण हैं - जैसे भारत की पड़ोस नीति, नेपाल की घरेलू राजनीति तथा चीन चीनी तत्व का नेपाल में मजबूत होना। भारत को घेरने के लिए चीन पिछले दशकों में भारत के पडोसी देशो - बांग्लादेश, श्रीलंका, मालदीव एवं नेपाल में राजनयिक सक्रियता तेज की है। वह सार्क देशों को आर्थिक सहायता एवं सस्ते ऋण देकर इन देशों मे अपनी स्थिति लगातार मजबूत कर रहा है। नेपाल में भारी चीनी निवेश इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। पुस्तक का कंटेट शोध में मदद करेगा।

3. विस्तृत वर्णनात्मक क्षेत्र

प्रस्तुत शोध प्रबंध के शीर्षक से शोध के क्षेत्र स्पष्ट हो जाता है। इस शोध प्रबंध में भारत-नेपाल सम्बन्धो पौराणिक, ऐतिहासिक, तथा सांस्कृतिक समानताओं के अलोक मे वर्तमान सामरिक सम्बन्धो का अध्ययन करना है। शोध की मुख्य विषय वस्तु भारतीय पडोस नीति का नेपाल के विशेष सन्दर्भ में अध्य्यन करना है। घरेलू घटनाये जिनका प्रभाव एक-दूसरे के साथ सम्बन्धो पर पड़ आदि का विश्लेषारात्मक अध्य्यन किया जायेगा । शोध में इस बात पर बल दिया जायेगा कि 21वीं शताब्दी में भारत एवं नेपाल के सम्बन्धों में कुछ बदलाव हुआ या नहीं । नेपाल में मधेशी आन्दोलन का आपसी संबंधों पर क्या प्रभाव रहा । के.पी. शर्मा ओली एवं अन्य वामपंथियों ने नेपाल की घरेलू राजनीति का कैसे भारत के विरुद्ध उपयोग किया ? साम्यवादी तथा विस्तारवादी चीन के साथ नेपाल ली निकटता का भारत-नेपाल संबंधों पर क्या प्रभाव पडा ? अतः इस शोध का

Saurabh Verma

Scanned with OKEN Scanner

अध्ययन क्षेत्र बहुत विस्तृत है जिसमें 21वीं शताब्दी के भारत-नेपाल सम्बंधों विश्लेषात्मक समीक्षा की जाएगी । इसकाल में दोनों देशों के मध्य सम्बंधों के उतर-चढ़ाव की व्याख्या की जाएगी ।

4. शोध अध्ययन का उद्देश्य

- भारत-नेपाल ऐतिहासिक सम्बन्धों का अध्ययन करना
- २१वीं शताब्दी में भारत एवं नेपाल में हुए सत्ता परिवर्तनों के अलोक में दोनों देशों के सम्बन्धों का अध्ययन करना
- नेपाल में बढ़ाते चीनी प्रभाव के कारण, भारत की सुरक्षा चिंताओं का अधययन करना
- अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए नेपाल द्वारा चीन पर बढ़ती निर्भरता, पर भारतीय चिंताओं का अधययन करना
- वर्तमान में भारत-नेपाल सम्बन्धों का मूल्यांकन करना

5. शोध प्रविधि

- शोध विषय के शीर्षक से स्पष्ट है कि प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय पड़ोस नीति का पड़ोसी देश नेपाल के विशेष सन्दर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन पर आधारित होगा ।
- प्रस्तुत शोध प्रबंध के सामग्री संकलन में प्राथमिक एवं द्वितीय दोनों स्रोतों का प्रयोग किया जायेगा ।
- प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत साक्षात्कार, प्रश्नावली, भारतीय एवं नेपाली विदेश मंत्रालयों तथा अन्य मंत्रालयों के दस्तावेजों एवं रिपोर्टों का अध्ययन किया जायेगा ।
- द्वितीय स्रोतों में भारत-नेपाल संबंधो पर लिखी गई पुस्तकों, लेखों, शोध प्रबंधों, समीक्षाओं आदि का अध्ययन किया जायेगा ।

6. संभावित निष्कर्ष

21वीं शताब्दी में भारत और नेपाल के संबंधों में खासी खटास देखने को मिली हैं । इसे चीन का तिलिस्म कहे या भारत के प्रति नेपाल की नीति जो लगातार परेशान करने की रही है। राजशाही के पतन के उपरांत नए संविधान का निर्माण एवं लागू करना तथा पिछले वर्षों में हुए मधेशी आंदोलन के कारण भारत - नेपाल आपसी संबंधों में खटास का अनुभव किया जा रहा है। भारत इन सब के पीछे नेपाल चीन निकट मानता को मानता है। क्या -भारत नेपाल ऐतिहासिक संबंधो पर ड्रैगन का नकारात्मक प्रभाव पड़ा है ? क्या में नेपाल की नई महत्वाकांक्षाएं "नई विश्व व्यवस्था" जाग रही है ? जिन्हें भारत पूरा नहीं कर पा रहा है।

Saurabh Nem

Scanned with OKEN Scanner

नेपाल द्वारा अपने यहां मधेशी आंदोलन के समय भारत पर एक तरफा आर्थिक नाकेबंदी का आरोप मढ़ा जाना इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। प्रश्न यह भी उठता है कि इसे दक्षिण एशिया में भारत को अलगथलग करने की ड्रैगन की नीति रूप में देखा जाए। नेपाल की दशकों पुरानी - राजनीतिक अस्थिरता भी तनाव ग्रस्त आपसी संबंधों का कारण हो सकता है। अतः ऐसे कालखंड में जब भारतनेपाल संबंध राजनैतिक खटास से गुजर रहे हैं एवं दूसरी इसकी और अन्य पड़ोसी देशों - के साथ भी संबंधों में तनाव का अनुभव किया जा रहा है। भारत को अपनी पड़ोस नीति की समीक्षा करने करके पुनः निर्धारण करने की आवश्यकता है। जाहिर है कूटनीतिक नजरिए से भारत के लिये ये सवाल बेहद अहम हैं।

भारत-नेपाल संबंधों में मतभेद हाल के वर्षों में ज्यादा देखने को मिल रहे हैं। जब 2015 में नेपाल के संविधान मसौदे को लेकर मधेसियों ने आंदोलन किया था, तब भारत-नेपाल सीमा कई दिनों तक ठप रही थी। नतीजतन, नेपाल ने अपनी कुछ महत्त्वपूर्ण सीमा चौकियों पर भारत पर नेपाल की ओर से व्यापारिक नाकेबंदी आरोप मढ़ा गया। भारतीय पक्ष की ओर से नेपाली सरकार के आरोपों का पूर्णता नकार दिया गया। परंतु अगले कुछ माह तक दोनों देशों के मध्य आरोपप्रत्यारोप - दौर जारी रहा परंतु अगलेकुछ माह तक दोनों देशों के मध्य आरोपप्रत्यारोप दौर जारी रहा रहा।-

फरवरी 2016 में नेपाल के प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली ने भारत की यात्रा की। अपनी यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री ओली ने भारत - नेपाल के मध्य संबंधों को सुधारने पर जोर दिया। इस यात्रा के दौरान दोनों देशों की मदद इस यात्रा के दौरान दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय शिखर बैठक हुई, जिसके परिणाम स्वरूप आपसी सहयोग के कुल 9 समझौतों पर हस्ताक्षर हुए। नेपाली प्रधानमंत्री ओली का झुकाव शुरू से ही चीन की ओर था, इसलिए उनकी इस यात्रा को भारत नेपाल संबं -धों में नई शुरुआत और तनाव खत्म करने के रूप में देखा। उसके बाद जून 2016 में प्रधानमंत्री ओली चीन के दौरे पर गए। नेपाल चीन के मध्य दौरे के समय कुल -4 समझौतों पर हस्ताक्षर हुए। इसमें चीन - तिब्बत रेल लिंक सबसे महत्त्वपूर्ण समझौता है जिसमें व्यापार को और अधिक बढ़ावा मिलेगा। चीन, नेपाल में पिछले कई वर्षों से भारी भरकम आर्थिक निवेश करता आ रहा है जिससे नेपाल के आधारभूत ढांचे जैसे बिजली -, सड़क, संचार आदि के विकास को नई गति मिली है। पिछले वर्षों में चीन के कई बंदरगाहो के व्यापारिक उपयोग के लिए नेपाल को आवश्यक अनुमति भी प्राप्त हो चुकी है। अतः स्पष्ट है कि चीन, नेपाल में भारत के प्रभाव को कम कर के स्वयं के लिए सामरिक बढ़त बनाता जा रहा है।

Saurabh Verma

Scanned with OKEN Scanner

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. जयशंकर. डॉ. एस. द इंडिया वे: स्ट्रैटेजीज फोर एन अनसर्टेन वर्ल्ड. हार्पर कोलिन्स इंडिया. (2020)
2. मेनन. शिवशंकर. चोइसेस: इनसाइड द मेकिंग ओफ इंडियाज फोरेन पोलिसी. ब्रूकिंग्स इंस्टीट्यूशन प्रेस. पेंगुइन. (2016)
3. मेनन. शिवशंकर. इंडिया एंड एशियाई जिओपोलिटिक्स : द पास्ट. प्रेजेंट. ब्रुकिंग्स इंस्टीट्यूशन प्रेस. (2021)
4. सरन. श्याम. हाउ इंडिया सीस द वर्ल्ड: फ्रॉम कौटिल्य टू मोदी: कौटिल्य टू द 21स्ट सेंचुरी. (2017)
5. चौधरी. स्वाति रंजन. अ हिस्टोरिकल सर्वे ऑफ इंडो-नेपाल रिलेशन्स. मेधा पब्लिशिंग हाउस. दिल्ली. (2015)
6. गुरमीत कंवल. द न्यू अर्थशास्त्र: ए सिक्योरिटी स्ट्रैटेजी फोर इंडिया. हार्पर कोलिन्स. (2016)
7. मेलोन. डेविड एम.. मोहन. सी. राजा. राघवन. श्रीनाथ. द ऑक्सफोर्ड हैंडबुक ऑफ इंडियन फोरेन पोलिसी ओयूपी ऑक्सफोर्ड (2015)
8. मंडल. मोनिका. इंडो-नेपाल रिलेशंस. के. डब्ल्यू. पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली. (2014)
9. मुनि. एस. डी.. फोरेन पालिसी ऑफ नेपाल. (1973)
10. सिंह. डॉ. आभा. भारत-नेपाल संबंध: एक राजनीतिक अध्ययन. अंकित प्रकाशन. दिल्ली (2018)
11. मुनि. एस. डी.. माओइस्ट इंसर्जेन्सी इन नेपाल: द चैलेंज एंड द रिस्पांस. रूपा एंड कंपनी. (2003)
12. यादव. डॉ. भूपेंद्र सिंह. भारत-नेपाल संबंध - समकालीन अध्ययन. इवान्सपब पब्लिशिंग बिलासपुर (2022)
13. पंत. हर्ष वी. पॉलिटिक्स एंड जिओपोलिटिक्स: डिकोडिंग इंडियस नेबोरहुड चैलेंज . रूपा प्रकाशन भारत. (2021)
14. श्रीवास्तव. डॉ. एसपीएल. सिंह. डॉ. करुणेंद्र और कुमार. डॉ. प्रमोद कुमार. भारत-नेपाल संबंध चुनौतियां और समाधान. एएसआर प्रकाशन. लखनऊ. (2018)
15. पंत. हर्ष वी. इंडियन फोरेन पालिसी: द मोदी एरा. द ओरिएंट ब्लैकस्वान. (2019)

Saurabh Verma

Scanned with OKEN Scanner

16. मिश्रा, अरुण, डाइवर्स डाइमेंशन्स ओफ़ इंडो-नेपाल रिलेशन्स, उदय पब्लिशिंग हाउस, विशाखापट्नम ,(2020)
17. झा, मुकेश कुमार, भारत नेपाल सम्बन्ध के आयाम-मिथिला 1816-1950, कल्पज पुब्लिकेशन्स (2024)
18. पांडेय, डॉ. पियूष कुमार, इंडो-नेपाल रिलेशन्स फ्रॉम पास्ट टू प्रेजेंट, वी.एल. मीडिया सोलूशन्स, नई दिल्ली (2021)
19. सिंह, राम अयोध्या, स्केप्टिकल नेबरिंग इंडो-नेपाल रिलेशन्स, पुष्पांजलि पुब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, (2019)
20. शुक्ला, प्रो. एपी एंड त्रिपाठी, प्रो. एसएनएम, इंडो-नेपाल रिलेशन्स: चैलेंजेज एंड ओप्पोर्तुनिटीज, नई दिल्ली, (2018)

पत्र पत्रिकाएं

- नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली
- द हिन्दू, नई दिल्ली
- टाइम्स आफ इण्डिया, नई दिल्ली
- हिंदुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली
- वर्ल्ड फोकस
- पोलिटिकल एंड इकॉनिमिक वीकली, नई दिल्ली
- इंडिया टुडे, नई दिल्ली
- जनसत्ता, नई दिल्ली
- दैनिक जागरण, लखनऊ
- द इंडियन एक्सप्रेस, नई दिल्ली
- द पैनीर
- द काठमांडू पोस्ट,
- द हिमालयन टाइम्स

Websites

- https://shodhganga.inflibnet.ac.in/
- https://www.mea.gov.in/

Saurabh Verma

Scanned with OKEN Scanner

- https://nepal.gov.np/
- https://mofa.gov.np/
- www.shodh.net
- https://mea.gov.in

Scanned with OKEN Scanner

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	Saurabh Verma
Title	21vi Shatabdi Mein Bharat Ki Pados Niti Ka Adhyayan: Nepal Ke Vishesh Sandarbh Mein
Paper/Submission ID	3685559
Submitted by	trivikramtiwari@gmail.com
Submission Date	2025-05-28 11:32:01
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **0%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

Saurabh Verma

Scanned with OKEN Scanner